**SHIV SHAKTI**

**International Journal in Multidisciplinary and Academic Research (SSIJMAR)**

**Vol. 7, No. 2, April 2018 (ISSN 2278 – 5973)**

***सूरज कुमार वशिष्ठ***

SURAJ KUMAR VASHISHT

Reg.No.) 5018102100214002

*निर्देशक*

***डॉ.विनय कुमार तिवारी***

HIMALAYAN UNIVERSITY

Takar Complex ,Naharlagun

***महाभाष्य के पस्पशाह्निक में शब्द का स्वरुप***

*संस्कृत भाषामें व्याकरणशास्त्र पर पाँच प्रकार के ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं- सूत्र, वार्तिक, भाष्य, तथा टीका, । सूत्रकार आचार्य पाणिनी, वार्तिककार कात्यायन तथा भाष्यकार पतञ्जलि व्याकरण परम्परा में मुनित्रय के रुपमे सुशोभित है। इसलिए पाणिनीय व्याकरण त्रिमुनि व्याकरण कहा जाता है। सर्वप्रथम वैदिक भाषाको संस्कृत किया। अनेक वैयाकरणो ने इन सूत्रों पर वार्तिकों का निर्माण किया। वार्तिककारों मे कात्यायन सर्वप्रमुख है। पतञ्जलि का महाभाष्य इन्ही वार्तिको पर एक बृहद् व्याख्यान है। जिसे वस्तुतः पाणिनी व्याकरण के उत्कर्ष का चरम कहा जा सकता है। महाभाष्य भाषाकी दृष्टिसे सरल होने पर भी यह भाव-गम्भीर्य के कारण दुर्बोध है। मीमांसा और न्यायमें शब्द पर स्थूल दृष्टिसे विचार किया गया है। मीमांसक की दृष्टिमें पद और वाक्य सब वर्ण रुप ही है। अतः शब्द वर्णात्मक और नित्य है। न्यायदर्शन को तो शब्दकी नित्यता भी स्वीकार नही क्योकि यह श्रुयमाण ध्वनि को ही शब्द मानता है। पतञ्जलिने शब्दनित्यत्व और अनित्यत्व के प्रश्नको व्याडिप्रमाण कहकर छोड दिया है। यद्यपि पाणिनी का शास्त्रशब्दनित्यत्व की स्थिति को ही स्वीकारके चलता है । व्याडिकृत संग्रह नामक ग्रन्थमें यह सिद्ध किया गया है कि शब्दको चाहे नित्य माना जाये तथा अनित्य दोनो ही परिस्थितिमे शब्दानुशासन अनिवार्य है। यह व्याडि व्याकरण के दार्शनिक सिद्धान्तों के प्रतिपादक संग्रह नामक ग्रन्थ के प्रणेता थे।शब्द और अर्थ उसके सम्बन्ध की नित्यता का ज्ञान लोकव्यवहार से होता है। लोकव्यवहार से ही शब्दार्थ सम्बन्धों की नित्यता सिद्ध होने पर भी शास्त्र के द्वारा उनका धर्मनियमान किया जाता है। शब्दोंका साधुत्व व्यवहार के आश्रित है अतः अन्वय व्यतिरेक से जो शब्दलोकमें व्यवहृत नही होते,उनमे स्वतः ही असाधुत्व आ जाता है,परन्तु शास्त्रमे अनेक ऐसे शब्दों का भी अनुशासन होता है जो लोकव्यवहार मे प्रचलित नही है, असाधु'लोकमे अप्रचलित'शब्दका अनुशासन करने से शास्त्र अनिष्ठानुशासन से दूषित हो जायेगा परन्तु दीर्घकालीन शतवार्षिक और सहस्रवार्षिक यज्ञोंके समान इन*

*शब्दोंका अनुशासन करके धर्म मान्ना एक कर्तव्य है। साधु शब्द अभ्युदयका हेतु है। अत एव केवल सूत्रोंका अध्ययन करने वाले व्यक्ति को भी वैयाकरण कहते है। इस सूत्ररुप व्याकरण- शास्त्रमें लाघव से प्रवृति के लिए प्रारम्भमे वर्णोका उपदेश किया गया है,यद्यपि साक्षात् किसी साधु शब्दका अनुशासन इससे नही होता। इसके अतिरिक्त अनुबन्धों का बोधन तथा इष्टवर्णोका उपदेश भी वर्णोउपदेश के प्रयोजन है।*



www.ssijmar.in